

प्रिय बच्चों, अभिभावक एवं सुधि पाठकगण— संस्कार परिवार, The Global Face की ये वार्षिकी-2026 जब आपके हाथों में होगी तो हम आप सब अपनी समस्त अच्छी बुरी यादों से बाहर निकल इस नए वर्ष/सत्र की संकल्पना संग अपने नए लक्ष्यों की ओर कदम बढ़ा चुके होंगे। और इसी पल में अपने विद्यालय से जुड़े युवा पीढ़ी समेत देश दुनिया की एक वर्तमान समस्या की ओर आप सबों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।



दोस्तों, भारत के पास दुनिया की सबसे बड़ी युवा शक्ति है। यह युवा शक्ति हमारी बड़ी संपदा है और राष्ट्रीय युवा नीति 2023 भारत के युवाओं के सर्वांगीण विकास पर जोर देती है, ताकि वे अपनी पूरी क्षमता का विकास कर सकें। परंतु खेदजनक है कि ऐसा हो नहीं रहा है या जो हो रहा, वह अपर्याप्त है। समस्या भीमकाय होती जा रही है जबकि बचपन पर ही युवा जिंदगी की इमारत खड़ी होती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा इसकी पहली आवश्यकता है ताकि सिर्फ डिग्री देना-लेना मकसद नहीं हो वरन अच्छे इंजिनियर, अच्छे डॉक्टर, अच्छे वैज्ञानिक, अच्छे टेक्नोक्रेट, अच्छे बिजनेस एक्स्पयूटिव आदि के साथ अच्छे इंसान बनने-बनाने की प्रक्रिया जारी रह सके। 'सादा जीवन उच्च विचार' के आदर्श के बजाय युवाओं में 'खाओ पीओ, करो आनंद' की भोगवादी लालसा जागृत करने वाली पाश्चात्य जीवन शैली और सबसे बड़ा रुपैयाँ मैया' जैसी मान्यतायें हमारे पुराने संस्कारों और संस्कृति को उपेक्षित कर रही हैं साथ ही स्वार्थों के टकराव में भारतीय समाज के परंपरागत मूल्यों का तेजी से लोप होता जा रहा है। हमारे सामने आज नई पीढ़ी को इन विकृतियों से बचाने की बड़ी समस्या है। भारत इस समय चरित्र के महासंकट से गुजर रहा है और इस सन्दर्भ में आज की इस डिजिटल युग / तारीख में एक जो भीमत्स समस्या मोबाइल की वजह से सामने दिख रही है, उसके निदान हेतु कुछेक वैश्विक डाटा और समाधान की ओर आपलोगों को सतर्क सचेत करने की एक छोटी सी कोशिश आपके लिए— " भारतीय परिवारों और वैश्विक स्तर पर बच्चों एवं किशोरों में स्क्रीन से नजदीकी, ऑनलाइन गेम्स की बढ़ती लत एक लाइलाज समस्या का रूप लेती नजर आ रही है। अमी विश्व के 80 देशों पर एक ताजे रिसर्च सर्वे के आधार पर विश्लेषण सामने आया है कि मानव इतिहास में पहली बार स्क्रीन की वजह से कुंद होते जा रहे दिमागी हालत के कारण जेन-जी अपने पेरेंट्स से कम बुद्धिमत्ता के स्तर पर पहुंच रहे हैं। अगर हाल फिलहाल के इन आंकड़ों या सर्वे को देखें तो हम पाते हैं कि, 27% बच्चे साइबर बुलिंग से लेकर सेक्सटॉर्षण के शिकार हो रहे, 45% किशोर युवाओं में सही निर्णय लेने की क्षमता नहीं दिख रही, स्क्रीन की अत्यधिक नजदीकी ने 91% बच्चों को आक्रामक बना डाला तो 78% बच्चे दूसरों से घुलमिल नहीं पा रहे। स्क्रीन की नजदीकी और अनचाहे वीडियो की वजह से ब्रिटेन, आयरलैंड, अमेरिका जैसे देशों के 20% स्कूलों में रेप कल्चर जैसा माहौल और छोटे छोटे बच्चों पर ऑनलाइन गेमिंग के चलते 10-10 लाख के कर्ज की खबरें सामने आती रहती है। दूसरी ओर शारीरिक मानसिक फिटनेस को देखें तो अनवरत मोबाइल लैपटॉप से चिपके रहने की वजह से हड्डियों का टेढ़ा होना और गर्दन उठाने में मुश्किलों के अतिरिक्त 30% बच्चों में मायोपिया, 21% बच्चों में दिमाग और आंखों का कमजोर होना, 43% बच्चों में एन्जॉयटी, 35% बच्चों में नींद की कमी पायी जा रही है। और इन सारी वजहों ने पूरे विश्व के शिक्षाविदों एवं शासन तंत्र को बेचैन कर रखा है। परिणामतः फ्रांस, स्वीडन, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, जर्मनी जैसे विकसित देशों में बच्चों के मोबाइल और सोशल मीडिया प्रयोग को प्रतिबंधित करने के साथ पढ़ाई लिखाई के पुराने पैटर्न पर वापस आने की मुहिम जोर पकड़ रही है।

और इधर अपने स्तर पर अपने इर्द गिर्द मेरे रिसर्च से जो चीजें बेचैन करने वाली सामने हैं वो ज्यादा ही भयावह दिखती हैं— "आजकल कुछ किशोरों का ध्यान पढ़ाई से भटक कर रिश्तों और सोशल मीडिया (WhatsApp, Instagram और न जाने कितने गुप्त प्लेटफॉर्म) में खो जाता है। मेरे द्वारा किए गए सैकड़ों ऑनपरेटिवस के आधार पर मेरा मानना है कि। पढ़ाई की जगह उनके चैट्स में 'बेबी', 'सोना', और साथ जीने-मरने की बातें

शामिल हो रही हैं। घंटों तक फोन पर समय बिताना, एक-दूसरे के लिए समय और जगह ढूँढना, और साथ में बड़े सपने देखना भले ही सुनने में प्यारा लगे, लेकिन इसका असर उनकी शिक्षा और भविष्य पर गहरा पड़ सकता है।

ऐसे समय में माता-पिता की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। सबसे पहले, माता-पिता को इस बदलाव की पहचान करनी चाहिए। जब किशोर अकादमिक चर्चाओं से बचने लगते हैं, अकेले रहना पसंद करते हैं, मोबाइल और लैपटॉप का अत्यधिक उपयोग करते हैं, और हर समय खुद को तैयार रखने पर ध्यान देते हैं, तो ये संकेत हैं कि उनका ध्यान गलत दिशा में जा रहा है। इन स्थितियों में सख्त कदम उठाने की जरूरत होती है, जो स्कूल, कोचिंग और यहाँ तक कि स्थान में बदलाव तक का सुझाव देते हैं ताकि बच्चों को एक स्वस्थ और सकारात्मक वातावरण में लाया जा सके। सिर्फ बच्चों को डांटना या रोकना काफी नहीं होगा। सही मार्गदर्शन, समय पर काउंसलिंग, और कड़ी निगरानी जरूरी है ताकि वे अपने लक्ष्यों पर फिर से ध्यान केंद्रित कर सकें और अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगा सकें। स्थान का बदलाव भी एक बड़ा कदम हो सकता है, जहाँ बच्चे को एक नए माहौल में नई शुरुआत का मौका दिया जाए। माता-पिता के समय पर उठाए गए ये कदम बच्चों के भविष्य को सुरक्षित, स्थिर और सफल बना सकते हैं।

आज के समय में, बच्चों के स्कूल या कोचिंग बंद होने के बाद उनके मुहल्ले पार्क रेस्टोरेंट रूम या प्लैट में अकेले मिलना, बिना माता-पिता को बताए, एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। क्या गाँव कस्बा क्या शहर खासकर लड़कियों के, साइबर बुलिंग, ब्लैक मैपिंग-मेलिंग, पीरियड्स की समस्या, बिना सलाह के गर्भनिरोधक गोलियाँ लेने, और अनचाहे प्रेगनेंसी के खतरे जैसे गंभीर मुद्दे सामने आ रहे हैं। हर साल कुछ न कुछ ऐसे मामले सामने आते हैं, जिनके बारे में आधे से ज्यादा पेरेंट्स को भनक तक नहीं होती। इस क्रम में बच्चों द्वारा खुद के बर्बादी के अन्य अहम पड़ाव हैं जो अति भयावह हैं लेकिन माता पिता धृतराष्ट्र और गांधारी बने बैठे हैं। ये वही पेरेंट्स होते हैं जो यह कहते नहीं थकते कि उनका बच्चा उनसे कुछ नहीं छिपाता। लेकिन सच यह है कि बच्चों के दोस्त, जिन्होंने खुद कभी ऐसे हालातों का सामना नहीं किया, सलाहकार बन जाते हैं। नासमझी में बच्चे झोलाछाप डॉक्टरों के जाल में फंस जाते हैं, क्योंकि अच्छे डॉक्टर पूछताछ करते हैं और माता-पिता की उपस्थिति की मांग करते हैं। इस सबके परिणामस्वरूप न सिर्फ बच्चों की पढ़ाई बर्बाद होती है, बल्कि उनकी सेहत और मानसिक संतुलन भी बुरी तरह प्रभावित होता है। पेरेंट्स मजबूर होकर सब सहते रहते हैं, लेकिन असलियत तो बहुत कम मामलों में सामने आती है। पेरेंट्स स्कूल कोचिंग या हॉस्टल बदलवा कर, स्थिति को 'सर्जरी' की तरह टालने की कोशिश करते हैं, जबकि असली समस्या की जड़ को नजरअंदाज कर देते हैं। आज के समय में बहुत कम पेरेंट्स हैं जो बिना बताए अपने बच्चों का मोबाइल चेक करने की हिम्मत करते हैं। लेकिन यह एक सच्चाई है कि मोबाइल, व्हाट्सएप, और इंस्टाग्राम ही वो साधन हैं जिनसे पता चलता है कि आपका बच्चा किस दिशा में जा रहा है। दुर्भाग्य से, जब माता-पिता या हमारे जैसे लोग मोबाइल चेक करते हैं, तो जो सच सामने आता है, वो बहुत कड़वा होता है। ऐसे में माता-पिता भी स्तब्ध रह जाते हैं।

अब वक्त आ गया है कि माता-पिता अपनी आंखें और कान खुले रखें। अपने बच्चों के साथ संवाद को मजबूत बनाएं और यह सुनिश्चित करें कि वे किसी गलत रास्ते पर न चलें। मोबाइल की दुनिया में बच्चों की गतिविधियों पर ध्यान देना, समय-समय पर उनकी बातचीत और सोशल मीडिया को समझना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। इस जागरूकता को बढ़ावा देने की जिम्मेदारी हमारी है, ताकि हमारे बच्चे सुरक्षित और सही मार्ग पर आगे बढ़ सकें। आइए, हम सब मिलकर इस बदलाव को समझें और बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाने की दिशा में कदम उठाएँ।

ज्ञानम विज्ञानम सहितम

Best Regards!

Vijay K. Kaul

Founder Director
Sanskar Bharti Global School &
Group Of Institutions